

न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश पोक्सो एक्ट, हापुड
उपस्थित:- ज्ञानेन्द्र सिंह यादव (उच्चतर न्यायिक सेवा) ; (UP-6237)

UPHP010045652026



Bail Application/1318/2026
Badri Prasad Tripathi Vs. State of U.P.
अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र संख्या- 1318/2026

बद्री प्रसाद त्रिपाठी पुत्र श्री पारस नाथ त्रिपाठी, निवासी-32-बी0, भगवन्त पुरम,
कनखल, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ।

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य ।

परिवाद सं०-3706 / 2021

अ० धारा-27(b)(i), 27(d) औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940

थाना- हापुड नगर, जिला हापुड

30.06.2026

अभियुक्त बद्री प्रसाद त्रिपाठी पुत्र श्री पारस नाथ त्रिपाठी की तरफ
से यह अग्रिम जमानत प्रार्थनापत्र उपरोक्त प्रकरण में अर्न्तगत धारा 438 द०प्र०स०/
482 बी०एन०एस०एस० प्रस्तुत किया गया है ।

अभियुक्त के विद्वान अधिवक्ता द्वारा यह कहा गया है कि प्रार्थी निर्दोष
है तथा परिवादी द्वारा गलत व असत्य तथ्यों के आधार पर परिवाद पत्र माननीय
न्यायालय के समक्ष गलत रूप से पंजीकृत कराया है। परिवादी / अभियोजन के
कथनानुसार परिवादी द्वारा एक परिवाद माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट महोदय,
हापुड के समक्ष प्रार्थी के विरुद्ध अर्न्तगत धारा 27(b)(i), 27(d) औषधि एवं प्रसाधन
सामग्री अधिनियम 1940 के अर्न्तगत दि० 22.07.2021 को प्रस्तुत किया गया है।
परिवादी / अभियोजन द्वारा दाखिल परिवाद में माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, हापुड
द्वारा अपने आदेश दि० 27.10.2021 के द्वारा प्रार्थीगण को 27(b)(i), 27(d) औषधि एवं
प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 के अर्न्तगत तलब किया जाकर सम्मन जारी कर दिये
गये थे। जिसमें प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध वारंट जारी हो चुके हैं। उक्त पत्रावली में
दिनांक 03.07.2026 नियत है। प्रार्थी एक सम्मानित परिवार का सदस्य है तथा
उसके द्वारा कोई भी अपराध किये जाने की कोई सम्भावना नहीं है। प्रार्थी को उक्त
केस में झूठा फंसाया गया है। प्रार्थी का उक्त केस से कोई वास्ता ताल्लूक किसी प्रकार
का नहीं है। उक्त परिवाद में प्रार्थी को अभियुक्त के रूप में इस आधार पर नामित किया
गया है कि प्रार्थी मैसर्स पोददार फार्मास्यूटिकल्स प्रा० लि० में तकनीकी विशेषज्ञ
कर्मचारी के रूप में नियुक्त था लेकिन प्रार्थी की कोई विशिष्ट भूमिका दर्शित नहीं की

गयी है तथा यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि मैसर्स पोददार फार्मास्यूटिकल्स प्रा० लि० में प्रार्थी तकनीकी विशेषज्ञ कर्मचारी के रूप में नियुक्त था लेकिन प्रार्थी की कोई विशिष्ट भूमिका दर्शित नहीं की गयी है। परिवादी द्वारा जिस बैच नम्बर निर्माण वर्ष में निर्मित औषधि की बाबत परिवाद दायर किया है उक्त औषधि पर स्पष्ट रूप से अंकित है कि उक्त औषधि को 20 डिग्री तापमान से कम एवं ठण्डी, सुखे व अंधेरे स्थान पर ही रखा जाना अंकित है। अगर उक्त औषधि का भंडारण उक्त मानकों के अनुसार नहीं किया जाता है तो निश्चित रूप से उक्त औषधि के खराब होने की प्रबल सम्भावना है। परिवादी द्वारा दाखिल परिवाद में उक्त औषधि के भंडारण से सम्बन्धित कोई भी दस्तावेजीय साक्ष्य एवं अन्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है ऐसी दशा में प्रतीत होता है कि उक्त औषधि का भंडारण औषधि पर अंकित मानक के अनुसार नहीं किया गया है। जिस कारण औषधि खराब हुई है। परिवादी द्वारा परिवाद दाखिल करने से पूर्व प्रार्थी की कम्पनी पर स्थलीय जांच की गई है जिसमें परिवादी द्वारा दवाई के निर्माण की बाबत सब कुछ सही रूप से पाया गया है। जिसकी आख्या परिवाद उपरोक्त पर दाखिल है। प्रार्थी उपरोक्त वर्णित पते का स्थायी निवासी है और उसके द्वारा माननीय न्यायालय के न्यायक्षेत्र से भागने की कोई सम्भावना नहीं है। प्रार्थी के विरुद्ध गलत तथ्यों पर आधारित कर परिवाद पत्र पंजीकृत कराया गया है। जबकि उक्त औषधि के निर्माण से प्रार्थी का कोई वास्ता ताल्लुक नहीं है। प्रार्थी के विरुद्ध कोई अपराध सर्जित नहीं होता है। प्रार्थी अग्रिम जमानत पाने का अधिकारी है। प्रार्थी का कोई अपराधिक इतिहास नहीं है। प्रार्थी की अग्रिम जमानत स्वीकार होने पर प्रार्थी के भागने व गवाहन को तोड़ने का कोई अन्देशा नहीं है। प्रार्थी माननीय न्यायालय द्वारा आरोपित शर्तों का पालन करने के लिए कटिबद्ध है। प्रार्थी अभियुक्त माननीय न्यायालय की सन्तुष्टि हेतु उचित जमानत देने को तैयार है तथा माननीय न्यायालय के समक्ष हाजिर अदालत रहेगा। उक्त आधारों पर प्रार्थी/ अभियुक्त को दौरान विचारण अग्रिम जमानत पर छोड़े जाने का तर्क किया गया।

इसके विपरीत विद्वान विशेष लोक अभियोजक द्वारा अग्रिम जमानत का विरोध किया गया तथा तर्क किया कि अभियुक्त का जुर्म गम्भीर प्रकृति का अपराध है। अभियुक्त का अग्रिम जमानत प्रार्थनापत्र निरस्त किये जाने का अनुरोध किया गया।

मैंने उभय पक्ष के तर्कों पर विचार किया तथा प्रपत्रों का अवलोकन किया।

धारा 482 बी०एन०एस०एस० के अनुसार अग्रिम जमानत में न्यायालय निम्नलिखित बातें पर विचार करेगी—

- (1) अभियोग की प्रकृति और गम्भीरता
- (2) आवेदक का पूर्ववृत्त, जिसमें यह तथ्य भी सम्मिलित है कि क्या वह किसी संज्ञेय अपराध के सम्बन्ध में किसी न्यायालय द्वारा दोषसिद्ध पर पहले ही कारावास भुगत चुका है।
- (3) न्याय से भागने की आवेदक की सम्भाव्यता और
- (4) जहां आवेदक को उसे इस प्रकार गिरफ्तार कराकर क्षति पहुंचाने या अपमानित

करने के उद्देश्य से अभियोग लगाया गया हो।

परिवादी का कथन है कि दिनांक 16-10-2018 को मुख्य चिकित्साधिकारी, हापुड़ के कार्यालय से टैबलेट मीसोप्रोस्टोल आई०पी० 200 mcg का नमूना नम्बर NZ/SMP/PK/A-28/2018-19 Batch No- TD-13, D/M-07/2018, D/E,12/2019 जो कि मैसर्स पोददार फार्मास्यूटीकल प्रा०लि० E - 35 इन्डस्ट्रीयल एरिया, हरिद्वार उत्तराखण्ड के द्वारा निर्मित किया गया है, परीक्षण एवं विश्लेषण लिये लिया गया था जिसे शासकीय विश्लेषक, क्षेत्रीय औषधि परीक्षण प्रयोगशाला सेक्टर 39 सी चण्डीगढ़ द्वारा परीक्षण व विश्लेषण किये जाने के पश्चात पाया गया कि उक्त नमूना मानक के अनुरूप नहीं है। उक्त उत्पाद विपक्षीगण के द्वारा निर्मित व विक्रय हेतु वितरित किया जाता है जिससे विपक्षी संख्या 1 ता 4 के द्वारा धारा 18(a)(i) सपठित धारा 16 और 17A (f) ड्रग्स एण्ड कास्मेटिक एक्ट के अन्तर्गत एक आपराधिक कृत्य है जो कि धारा 27(b)(i), 27(d) ड्रग्स एण्ड कास्मेटिक एक्ट के अन्तर्गत एक दण्डनीय अपराध है। ”

अभियुक्त के विद्वान अधिवक्ता, एवं विद्वान विशेष लोक अभियोजक की तर्कपूर्ण बहस को सुना तथा पत्रावली का सम्यक् अवलोकन किया।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने विधि-व्यवस्था सुशीला अग्रवाल बनाम दिल्ली राज्य व अन्य (2020) 5 एस0एस0सी0 (1) (संवैधानिक पीठ) में यह मत व्यक्त किया है कि, अग्रिम जमानत एक आपवादिक अधिकार है, जिसका अत्यन्त विशेष परिस्थितियों में ही प्रयोग करना चाहिए और यह कोई निर्वाद अधिकार नहीं है।

अग्रिम जमानत देने के सम्बन्ध में न्यायालय को अन्य बातों के अतिरिक्त अभियोग की प्रकृति और गम्भीरता व इस सम्भाव्यता पर ध्यान देना चाहिए कि, आवेदक द्वारा अभियुक्त को ऐसे गिरफ्तार कराकर क्षति पहुंचाने या अपमान करने के उद्देश्य से अभियोग लगाया गया है।

सुनने एवं अभियोजन प्रपत्रों के अवलोकन से प्रकट होता है कि प्रार्थी /अभियुक्त के विरुद्ध परिवाद सं०-3706/2021,अ० धारा-27(b)(i), 27(d) औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 ,थाना- हापुड़ नगर, जिला हापुड़ पंजीकृत है । प्रार्थी /अभियुक्त के विरुद्ध सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर **अपमिश्रित औषधि निर्मित कर विक्रय करने का गंभीर आरोप है** । जिनकी बाबत लिए गए नमूने जांच में मानक अनुसार नहीं पाए गए है । अग्रिम जमानत प्रार्थनापत्र केवल उन अपवादिक परिस्थितियों में स्वीकार किया जा सकता है, जहां आवेदक/अभियुक्त को या तो झूठा फंसाया गया हो या आवेदक/ अभियुक्त को अपमानित या आहत करने के उद्देश्य से आरोप लगाया गया हो, जो न्याय के उद्देश्यों को अग्रसारित करने वाले न हों। पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य से प्रथम दृष्टया आवेदक/अभियुक्त को मात्र क्षति पहुंचाने या अपमानित करने के लिए झूठा नामित किया जाना प्रतीत नहीं होता है। न्यायालय द्वारा अभियुक्त के

विरुद्ध कोई उत्पीडनात्मक कार्यवाही हेतु आदेश पारित नहीं किए गए हैं । आवेदक/ अभियुक्त को इस स्तर पर अग्रिम जमानत पर छोड़े जाने का पर्याप्त आधार नहीं है। अभियुक्त का कृत्य अत्यन्त गंभीर व जघन्य प्रकृति का सामाजिक अपराध है।

मामले के सम्पूर्ण तथ्य, परिस्थितियों एवं अपराध की गम्भीरता को दृष्टिगत रखते हुए अभियुक्त को अग्रिम जमानत पर मुक्त किये जाने का पर्याप्त आधार प्रतीत नहीं होता है। अतः अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त किये जाने योग्य है।

आदेश

अभियुक्त बद्री प्रसाद त्रिपाठी पुत्र श्री पारस नाथ त्रिपाठी का अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र परिवाद सं०-3706/2021, अ० धारा-27(b)(i), 27(d) औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940, थाना- हापुड नगर, जिला हापुड के प्रकरण में निरस्त किया जाता है।

(ज्ञानेन्द्र सिंह यादव)
अपर सत्र न्यायाधीश/
विशेष न्यायाधीश पोक्सो एक्ट,
हापुड।